eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

पर्यावरणीय मुद्दों का शिक्षा और आर्थिक विकास पर प्रभाव

नेहा श्रीवास्तव[1]
[1]शोध छात्रा, शिक्षा विभाग छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपूर

Received: 24 Oct 2024 Accepted & Reviewed: 25 Oct 2024, Published : 31 Dec 2024

Abstract

पर्यावरणीय मुद्दे 21वीं सदी की सबसे महत्त्वपूर्ण चुनौतियां में से एक के रूप में उभरता हुआ हैं या शोध पत्र जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और जैव विविधता के नुकसान, वनो की कटाई, संसाधनों की कमी, भूमि का क्षरण जैसे पर्यावरण सिद्धांत की शिक्षा और आर्थिक विकास पर बहु आयामी प्रभाव का अन्वेषण करता है इन क्षेत्रों के बीच अंतर संबंधों का विश्लेषण करते हुए यह पत्र पाठ्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा को शामिल करने और आगे विकास को बढ़ावा देने के लिए स्थाई प्रभाव को अपनाने की आवश्यकता को उजागर करता है। पर्यावरण शिक्षा का मूल उद्देश्य मानव पर्यावरण के अंतर संबंधों के व्याख्या करना तथा उन संपूर्ण घटनाओं का विवेचन करना है जो पृथ्वी पर जीवन को परिचालित करते हैं इसमें मात्र मानव जीवन ही नहीं अपितु जीव जंतु अवं वनस्पति भी सम्मिलत है। मानव, तकनीकी विकास एवं पर्यावरण के अंतर संबंधों से जो पारिस्थितिक चक्र बनता है वह संपूर्ण क्रियाकलापों और विकास को नियंत्रित करता है यदि इनमें संतुलन रहता है तो सब कुछ समान गति से चलता रहता है लेकिन अगर इनमें व्यतिक्रम आता है तो पर्यावरण विकृत होने लगता है और इसका हानिकारक प्रभाव न केवल जीव जगत के घटकों पर भी होता है और पूरी मानव सभ्यता खतरे में पड़ सकते है। अतः हमे पर्यावरण शिक्षा के बारे मे जानकारी होना और छात्रों तक उसकी पहुंच सुलभ करवाना अति आवयशक है। जिससे देश के लोग शिक्षित होने क साथ साथ आर्थिक विकास मे भी मद्द करे।

कुंजी शब्द – पर्यावरणीय मुद्दे, शिक्षा, आर्थिक विकास

Introduction

पर्यावरण का नुकसान स्वास्थ्य, आर्थिक स्थिरता और शैक्षणिक अवसरों के लिए महत्वपूर्ण खतरे पैदा करता है जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, वायु और जल प्रदूषण और जैव विविधता का नुकसान ऐसे आपस में जुड़े हुए मुद्दे जो समाज के लिए विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करते हैं यह पत्र चर्चा करता है कि यह पर्यावरण मुद्दे शिक्षा के परिणाम आर्थिक विकास को कैसे प्रभावित करते हैं स्थाई समाधानों की आवश्यकता पर जोर देते हुए पर्यावरणीय शिक्षा को महत्वपूर्ण बनाता है। अतः इस शोध पत्र में पर्यावरणीय मुद्दे, शिक्षा अवं आर्थिक विकास पर जोर देता है। पर्यावरणीय शिक्षा पर्यावरण के प्रति सजकता तथा संवेदनशीलता उत्पन्न करने की शैक्षिक प्रक्रिया है यह छात्रों को यह समझने में मदद करता है कि उनके निर्णय और कार्य पर्यावरण को कैसे प्रभावित करते हैं, जटिल पर्यावरण मुद्दों को संबोधित करने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल का निर्माण करता है साथ ही भविष्य के लिए हमारे पर्यावरण को स्वस्थ और टिकाऊ बनाए रखने के लिए किस तरह से कार्रवाई कर सकते हैं। पर्यावरणीय शिक्षा व्यक्ति को पर्यावरण संबंधित समस्याओं का ज्ञान तथा मूल्य के विकास द्वारा जीवन के लिए तैयार करती है। पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता हमारे वैश्विक नागरिकों की जरूरत को पूरा करने के लिए पारिस्थितिक आर्थिक सांस्कृतिक आध्यात्मिक और बहुत कुछ समझ और रचनात्मक समस्या समाधान की आवश्यकता होती है अतः

परम शिक्षा विद्यार्थियों को 21वीं सदी में जटिल पर्यावरण चुनौतियां संविधान करने के लिए ज्ञान और कौशल प्रेरणा से लैस करती है।

शोध का उद्देश्य– शोध पत्र का उद्देश्य है किस प्रकार से पर्यावरण के मुद्दे हमारे शिक्षा और आर्थिक विकास को प्रभावित करती है उन सभी तथ्यों को उजागर करना ही इस शोध पत्र का उद्देश्य है यह पर्यावरण मुद्दों शिक्षा और आर्थिक विकास के बीच संबंध का व्यापक अवलोकन प्रदान करता है ।

शोध विधि– प्रस्तुत शोध विधि का स्वरूप वर्णनात्मक है शोध विधि में प्रयुक्त आंकड़े शोध पत्रिकाओं, पुस्तकों, इंटरनेट के माध्यम से लिए गए हैं।

पर्यावरणीय मुद्दे– भारत में पर्यावरण पर्यावरणीय मुद्दे और उनकी गतिविधियां शिक्षा पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं तो यहां कुछ प्रमुख पर्यावरणीय मुद्दों और उनके प्रभावों का प्रस्तुत किया गया है।

प्रमुख पर्यावरण मुद्दे–

वायु प्रदूषण– शहरों में वायु की गुणवत्ता में गिरावट औद्योगिक धुएं और वाहनों के उत्सर्जन के कारण वायु प्रदूषण अत्यधिक बढ़ता जा रहा है। वायु प्रदूषण एक गंभीर समस्या होती जारी है जिसकी वजह से बहुत समस्यायें, त्वचा सम्भंद्धित बीमारियां बढ़ती जारी है जो एक सोचनीय विषय हो गया है।

जल संकट– जल की कमी जल प्रदूषण और नदियों का दूषित होना भी एक पर्यावरण प्रमुख पर्यावरण मुद्दा है। जल ही जीवन है अतः इसके आभाव मे या जल की दूषित होने से बहुत सारी समस्याएं आ सकती है। बिना जल जीवन जीना नामुमकिन सा है इसलिए जल संकट का बचाव करना अति आवश्यक है। पीजीआईएमईआर और पंजाब प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा किए गए संयुक्त अध्ययन से पता चला है कि नुल्ला के आसपास के जिलों में जिलों में भूमिगत जल तथा नल के पानी में स्वीकृत सीमा (एमपीएल) से अधिक मात्रा में कैल्शियम, मैग्नीशियम, क्लोराइड, मरकरी तथा बीटा एन्डोसल्फान व हेप्टाक्लोर जैसे कीटनाशक पाए गए हैं। इसके अलावा पानी मे रासायनिक व जैवरासायनिक ऑक्सीजन की मांग, अमोनिया फॉस्फेट, क्लोराइड क्रोमियम तथा क्लोरोपायरीफॉस जैसे कीटनाशक भी अधिक सांद्रता में थे। भूमिगत जल में भी निकल व कैडमियम की उच्च सांद्रता भी पायी गयी है।

भूमि का नुकसान होना कृषि भूमिका अवस्थित उपयोग वनों की कटाई और शहरीकरण इत्यादि से भूमि का बहुत ज्यादा ही नुकसान होता चला जा रहा है।

जलवायु परिवर्तन– ग्लोबल वार्मिंग, अत्यधिक मौसम की घटनाएं और उसके प्रभाव की वजह से हमारी जलवायु में अत्यधिक परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं। वैश्विक तापमान में वृद्धि चरम मौसम की घटनाओं का कारण बनती है जो कृषि आप संरचना आजीविका को प्रभावित करती है।

बायोडायवर्सिटी को नुकसान प्रजातियों का विलुप्त होना और पारिस्थितिक तंत्र का असंतुलन होते जाना भी एक गंभीर समस्यों में से है।

पर्यावरणीय मुद्दे का शिक्षा पर प्रभाव – पर्यावरण मुद्दों और शिक्षा के बीच गहरा संबंध है जो यह दर्शाता है की किस प्रकार पर्यावरण की शिक्षा छात्रों के लिए आवयशक है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

जागरूकता और पाठ्यक्रम – पर्यावरण शिक्षा की कमी से छात्रों के बीच स्थाई प्रभाव के प्रति जागरूकता की कमी होती जा रही है स्कूलों के पाठ्यक्रम में पर्यावरणीय अध्ययन को शामिल करना एक पर्यावरण रूप से जागरूक नागरिक विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण है।

शिक्षा तक पहुंच– पर्यावरणीय आपदाएं जैसे बाढ़, सूखा जो बुनियादी ढांचे जैसे स्कूलों को नुकसान पहुंचा सकती है इससे लंबे समय तक स्कूल बंद रहने और शिक्षा तक पहुंच में कमी आ सकती थी विशेष रूप से कमजोर क्षेत्र में नुकसान पहुँचाती है। अक्सर शैक्षिक अब संरचना को बाधित करती है विशेष कर विकासशील क्षेत्र में जिसके परिणाम स्वरुप ड्रॉप आउट दरें बढ़ जाती है और साक्षरता स्तर में कमी आती है।

सामाजिक असमानता– सामाजिक असमानता पर्यावरणीय व्यवस्था अक्सर हाशिये पर रहने वाले समुदाय को आसमान रूप से प्रभावित करती है जिससे उनकी शैक्षिक अवसर सीमित हो जाते हैं संसाधनों की कमी गुणवत्ता वाली शिक्षा तक पहुंच को बाधित कर सकती है जिसे गरीबों के चक्र बना रखा जाता है और आर्थिक गतिशीलता सीमित होती है।

स्वास्थ्य और कल्याण– खराब पर्यावरण स्थितियां जैसे वायु, जल प्रदूषण छात्रों के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है बीमारी में वृद्धि से अनुपस्थित बढ़ती है जिससे सीखने के परिणाम और समग्र शैक्षिक उपलब्धि पर असर पड़ता है। जिससे हमारे छात्र शिक्षा के क्षेत्र मे पीछे रह जाते है।

पर्यावरणीय मुद्दे का आर्थिक विकास पर प्रभाव

संसाधनों की उपलब्धता– अस्थाई प्रथाओं के कारण प्राकृतिक संसाधनों का नुकसान उन उद्योगों को जोखिम में डालता है जो इन संसाधनों पर निर्भर करते हैं जिससे आर्थिक अस्थिरता उत्पन्न होती है। स्वास्थ्य लागत प्रदूषण से संबंधित स्वास्थ्य समस्याएं स्वास्थ्य देखभाल की लागत को बढ़ाती है जो शिक्षा और अन्य आवश्यक सेवाओं से धन को दूर करती है यह विशेष रूप से कम विशेष रूप से कम आय वाले देश का आर्थिक बोझ बनता है। नवाचार और रोजगार एक सकारात्मक प्रक्रिया है कि पर्यावरण चुनौतियों का समाधान करने से हरित प्रौद्योगिकी और स्थाई प्रथाओं में नवाचारों ने रोजगार के अवसर पैदा हो सकते हैं आर्थिक स्थिरता को बढ़ावा मिलता है।

आपदा पुनर्प्राप्ति लागत – जलवायु परिवर्तन से जुड़ी प्राकृतिक आपदाएं महत्वपूर्ण आर्थिक लागत लगती है जो विकास परियोजनाओं में से धन की पुनर्प्राप्ति प्रयासों की ओर मोड़ती है इसे आर्थिक प्रगति धीमी हो जाती है और प्रभावित क्षेत्रों में निवेश को हतोत्साहित करती है।

श्रम उत्पादकता– पर्यावरणीय कारक जैसे अत्यधिक गर्मी या प्रदूषण श्रम उत्पादकता को कम कर सकते हैं एक स्वस्थ कार्यबल उच्च आर्थिक उत्पादन में योगदान देता है इसलिए पर्यावरण स्वास्थ्य संबोधित करना आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

हरि अर्थव्यवस्था– हरि अर्थव्यवस्था में संक्रमण नवाचार और रोजगार सृजन के लिए अवसर प्रदान करता है जैसे नवीनीकरण ऊर्जा नवीनीकरण ऊर्जा सतत कृषि और संरक्षण। यह बदलाव विकास को प्रोत्साहित कर सकता है जबकि पर्यावरणीय चुनौतियों को भी संबोधित करता है।

पर्यावरण शिक्षा का शिक्षा और आर्थिक विकास पर प्रभाव

पर्यावरणीय जागरूकता– पर्यावरण में पर्यावरण मुद्दों को शामिल करने से छात्रों में जागरूकता बढ़ती है पाठ्यक्रम में इन मुद्दों को जोड़ने से युवा तथा उनकी मानसिकता विकसित होती है।

अनुसंधान और नवाचार– विश्वविद्यालय और शोध संस्थानों में पर्यावरणीय समस्याओं पर अनुसंधान को बढ़ावा देने से समाधान खोजने में मदद मिलती है। अगर हम छात्रों को शोध करने के लिए प्रेरित करते है तो इससे भी काफी सकरात्मक बदलाव देखने को मिल सकता है।

व्यवहार में बदलाव– जब छात्र पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में जानने लगते हैं तो वह अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रेरित होते हैं जैसे कि कचरे का सही निपटान पुनर्चक्रण और ऊर्जा संरक्षण इत्यादि के बारे में जानकारी इकट्ठा करते हैं।

सामुदायिक भागीदारी– शिक्षा संस्थानों के माध्यम से सामुदायिक परियोजनाएं और पहले शुरू की जाती है जो पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देती है जिसके माध्यम से काफी हद तक पर्यावरण समस्याओं से निजात प्राप्त होती है।

पर्यावरण मुद्दे और आर्थिक विकास के बीच संबंध– पर्यावरण मुद्दे और आर्थिक विकास के बीच संबंध इस प्रकार है जो की यह दर्शाता है की पर्यावरण का नुकसान किस प्रकार से हमारे देश की आर्थिक स्थिति को प्रभावित करते है।

- पर्यावरण सतत विकास लक्ष्य को हासिल करने के लिए सबसे बड़ा खतरा है ।
- पर्यावरण चरण से उत्पादकता में कमी लागत में वृद्धि और आर्थिक नुकसान हो सकता है।
- जलवायु परिवर्तन से कृषि वानिकी मत्स्य पालन और पर्यटन के क्षेत्र को नुकसान पहुंच सकता है।
- पर्यावरणीय समस्याओं को कम करने के लिए वैश्विक आर्थिक विकास को पर्यावरण के अनुकूल होना चाहिए।
- विकासशील और विकसित देशों के बीच आर्थिक संबंधों को न्याय संगत बनाना चाहिए ।
- पर्यावरण चरण से उत्पन्न होने वाले जोखन से निपटने के लिए बाजार आदतों विनिमन का इस्तेमाल किया जा है।
- निवेश करने के लिए एक एकीकरण रणनीति का इस्तेमाल किया जा सकता है।

पर्यावरणीय गतिविधियां

- सुरक्षित पर्यावरण के लिए आंदोलन जैसे **नम्रता बचाओ आंदोलन, चिपको आंदोलन, प्लास्टिक विरोधी** अभियान
- सरकारी नीतियां रू स्वच्छ भारत मिशन, जल जीवन मिशन और राष्ट्रीय जैव विविधता कार्रवाई योजना
- NGOs और समुदाय आधारित प्रयास समुदाय पर्यावरण संरक्षण के लिए काम कर रहें है, जैसे वृक्षारोपण जल संरक्षण आदि

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

नीति संबंधी निहितार्थ– पर्यावरण मुद्दों के शिक्षा आर्थिक विकास पर प्रभाव को कम करने के लिए नीति निर्माता को निम्नलिखित पर विचार करना चाहिए

- पर्यावरण शिक्षा का एकीकरण पाठ्यक्रम सुधारो में पर्यावरण विज्ञान स्थिरता और जलवायु परिवर्तन पर जोर देना चाहिए ताकि सूचित नागरिकों को एक पीढ़ी का विकास हो सके।
- **हरित अवसंरचना में निवेश**
  सरकारों को ऐसे स्थाई हरित अवसंरचना में निवेश करना चाहिए जो आर्थिक विकास का समर्थन करें और प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा करें।
- **समुदाय की भागीदारी**
  स्थानीय समुदाय को पर्यावरण प्रबंधन और शैक्षणिक पहलुओं को संबंध में निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल किया जाना चाहिए ताकि प्रासंगिक और प्रभावी समाधान सुनिश्चित किया जा सके।

निष्कर्ष– पर्यावरण मुद्दे शिक्षा और आर्थिक विकास के साथ जटिल रूप से जुड़े हुए हैं इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जिससे पाठ्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा को शामिल करना और स्थाई आर्थिक प्रथाओं को बढ़ावा देना शामिल है इन क्षेत्रों को प्राथमिकता देकर समाज एक ऐसा स्थाई भविष्य बन सकता है जो पारिस्थितिक स्वस्थ मानव विकास के बीच संतुलन स्थापित करें। पर्यावरणीय मुद्दें शिक्षा और आर्थिक विकास के बीच संबंध जटिल है पर्यावरणीय चुनौतियों को संबोधित करना समता मूलक शिक्षा तक पहुंच को बढ़ावा देने और सतत आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने के लिए आवश्यक शिक्षा प्रणाली में पर्यावरण जागरूकता को शामिल करके और सतत प्रथाओं को अपनाकर समाज एक ऐसी लचीली भविष्य की दिशा में काम कर सकते हैं जो लोगों और ग्रह दोनों के लिए लाभकारी है।

पर्यावरण मुद्दे और उनकी गतिविधियां न केवल सामाजिक आर्थिक विकास को प्रभावित करती है बल्कि शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण बदलाव लाने का अवसर प्रदान करती है इस दिशा में बढ़ते कदम से एक स्थाई भविष्य बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रवृत्ति मिल सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

- HkaMkjh] vkj- ¼2022½- The Impact of Climate change on Education in Developing Countries. Journal of enviormental Studies, 14(2), 120-134
- IPCC. (2021). Climate Change 20221: The Physical science Basis. Cambridge university Press.
- विश्व बैंक: (2020).World Developer Reort 2020: The changing Nature 0f work.
- UNESCO. (2017). Education for Sustainable Development Goals:Learning Objectives.
- UN Environment Programme. (2019). Global Enviornment outlook – GEO-6: Healthy Planet, Healthy People.
- www.google.com
- https://hi.wikipedia.org}wiki Hkkjr es i;kZoj.k dh leL;k